वर्ष-9 अंक-11, नवम्बर 2018

पटना कलम

बिहार के सांस्कृतिक परिदृश्य का साक्षी

बिहार रत्न

रामगोपाल शर्मा रुद्र

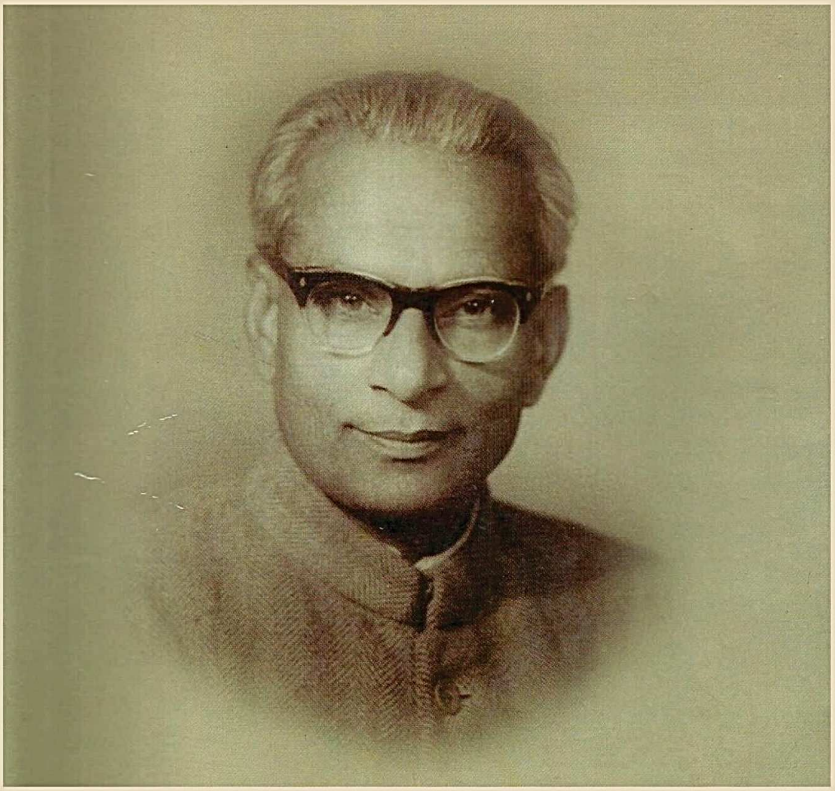

उत्तर छायावादी कवियों में रामगोपाल शर्मा रुद्र का बेहद अहम स्थान है और आलोचकों के मुताबिक रुद्र मस्ती और फक्कड़पन के कवि हैं । रामगोपाल शर्मा का जन्म 1 नवंबर 1912 को तारेगना में हुआ था हलांकि उनका पुश्तैनी गांव पटना के दानापुर में शाहपुर है । रुद्र जी की प्रारंभिक शिक्षा उनके पुश्तैनी गांव में ही हुआ था और बाद में उन्होंने देवघर विद्यापीठ से हिंदी साहित्यालंकार किया था । तेरह साल की उम्र में ही रुद्र जी ने काव्य रचना की शुरूआत कर दी थी लेकिन उनकी पहली रचना 1929 में कलकत्ता से प्रकाशित श्रीकृष्ण संदेश में छपी । रुद्र जी ने आरंभ में शिक्षण का कार्य किया । कालांतर में वो बिहार राष्ट्रभाषा परिषद के पुस्तकालय में पुस्तकाध्यक्ष होकर पटना आ गए । 1970 में सेवानिवृत्ति के बाद स्वतंत्र लेखन, संपादन और अनुवाद का काफी काम किया । बाद में उन्होंने बिहार के मगही अकादमी को भी संभाला । 19 अगस्त 1991 को पटना में उनका निधन हो गया ।

रुद्र जी ने किशोरवय से ही काव्य रचना प्रारंभ कर दी थी लेकिन उनता पहला काव्य संग्रह शिंजनी 1946 में प्रकाशित हो सकी । इस संग्रह के दूसरे संस्करण की भूमिका में रुद्र जी ने 1954 में लिखा है- जैसी तबीयत इन दिनों आई हुई है, काश, उन दिनों भी ऐसी ही बनी होती तो मेरी कविताओं का प्रथम संग्रह सन 1938 में ही पुस्तकरूप में आ गया होता। उस भूमिका में रुद्र जी ने आगे लिखा- अपने आत्मतुष्ट स्वभाव और लापरवाह तबीयत से समय टलता गया, टलता गया- यही लापरवाह तबीयत रुद्र की कविताओं भी लक्षित किया जा सकता है । पहले काव्य संग्रह शिंजनी के चार साल बाद 1950 में द्रोण, 1954 में मूच्छर्ना और हिमशिखर,1960 में भागीरथी, 1963 में मीड़, 1991 में शब्दवेध, 1991 में ही रुद्र समग्र और 1992 में हर अक्षर है टुकड़ा दिल का प्रकाशित हुआ । इसके अलवा रुद्र जी ने बच्चों के लिए भी बहुत लिखा और तकरीबन आधा दर्जन बालोपयोगी पुस्तकें भी प्रकाशित हैं ।

रुद्र जी हिंदी के चंद उन कवियों में हैं जो बेहद सुरीले स्वर में काव्य पाठ किया करते थे । रुद्र समग्र में लिखा गया गया है- आज बहुत कम लोग यह जानते हैं कि रुद्र जी का कंठस्वर ही वंशीस्वर-जैसा नहीं था, कभी उनकी उंगलियां भी तबले पर विद्युत गति से थिरकती थी । इसके अलावा लोकगीतों में उनकी गहरी रुचि थी । अपनी पत्नी से वे लोकगीत गवाकर सुनते थे और उनकी धुनों पर विशेष ध्यान देते थे । लोकगीतों पर रुद्र जी ने कई लेख लिखे । उनके पिता सितार बजाते थे और वो खुद भी हारमोनियम के शौकीन थे । यह यों ही नहीं कि उनकी रचनाओं में हिंडोल, विहाग, कजरी, मल्हार, आदि का जिक्र आता है ।

रुद्र जी मस्ती के कवि थे और दिनकर के मुताबिक उनकी कविताओं में उलझनें नहीं सताती और बहक भी कम है । दिनकर ने 1954 में शिंजनी के दूसरे संस्करण की भूमिका में लिखा था कि रुद्र को भूलना इतिहास के लिए अब कठिन होगा । भावपक्ष में आनंद और उमंग रुद्र की दो प्रबल विशेषताएं हैं । यही कारण है कि देश के युवक उनकी कविताओं को इतना प्यार करते हैं । रुद्र जी को पाठकों का जबरदस्त पुरस्कार मिला । 1991 में बिहार सरकार के राजभाषा विभाग का दिनकर पुरस्कार भी रुद्र जी को दिया गया ।

● (बिहार के 100 रत्न पुस्तक से)

वर्ष - 9, अंक-11, नवम्बर 2018
पटना कलम
बिहार के सांस्कृतिक परिदृश्य का साक्षी

संरक्षक
कृष्ण कुमार ऋषि

प्रधान संपादक
रवि परमार

संपादक
विनोद अनुपम

संपादकीय संपर्क
निदेशक
सांस्कृतिक कार्य निदेशालय
कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार
विकास भवन, बेली रोड, पटना
email :culturebihar@gmail.com
vinod.anupam63@gmail.com

प्रधान सम्पादक की कलम से ...

यह उत्सव का समय है। दशहरा, दिवाली और छठ.एक के बाद एक आते त्योहार हमारे जीवन में उत्साह की एक लहर के साथ आती हैं, जिसमें भींगकर हम अपने सारे दुख दर्द गिले शिकवे भूल जाते हैं, भूलने की कोशिश करते हैं। ये त्योहार सिर्फ हमें हमारी आस्थाओं से ही नहीं जोड़ते, हमें एक नया जीवन भी देते हैं। आधुनिक शब्दावली में कहें तो त्योहार हमें रिचार्ज करते हैं, ताकि अगले सफर तक पूरी सक्रियता और उत्साह के साथ हम अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन करते रह सकें। आश्चर्य नहीं कि बिहार में शायद ही कोई ऐसा त्योहार हो जो किसी एक जाति धर्म के बीच संकुचित रह गया हो। यहां ताजिए में हिन्दुओं द्वारा भी मनौती बांधी जाती रही है तो छठ के बाजार में एक बडी जवाबदेही मुस्लिमों की होती है। दशहरे के मेले के सद्भाव को तो कहने की आवश्यकता ही नहीं। वास्तव में बिहार के उत्सवों की पहचान इसकी धार्मिक निष्ठा से नहीं सांस्कृतिक सक्रियता से होती है। ये सभी उत्सव किसी सांस्कृतिक उत्सव की तरह हमारे सामाजिक संबंधों को सशक्त बनाने का दायित्व निभाती हैं।

छठ तो सही मायने में समस्त कला विधा का संगम है। सामाजिक भागीदारी का इतना बडा, इतना प्राचीन और इतना भव्य आयोजन दुनिया में दूसरा नहीं हो सकता। छठ शायद एकमात्र ऐसा उत्सव है जिसमें आम भारतीय जीवन को अपनी संपूर्णता में अभिव्यक्ति मिलती है। खान-पान, क्राफ्ट, चित्रकला, संगीत जीवन के जो भी रंग आप सोच सकते हों, छठ में उसकी अहम भूमिका होती है। यहां कद्दू भात से भारतीय व्यंजन की विविधता को पहचान मिलनी शुरु हो जाती है, दूसरी ओर टोकरी और सूप में स्थानीय शिल्प और चित्रकला का हुनर देखा जा सकता है। सूप और टोकरी को जितनी तन्मयता और कुशलता से मौसमी फलों, पकवानों, मेवों और दीयों से सजाया जाता है, उसे इन्सटालेशन का एक रूप समझने में शायद ही किसी को आपत्ति हो सकती है। यह इन्सटालेशन घाटों की सजावट में और भी विस्तार पाता दिखता है। कला की इस अभिव्यक्ति को पारंपरिक लोकगीत पूर्णता देते लगते हैं। लगातार तीन दिनों तक छठ के उत्सव के साथ संगीत जुड़ा रहता है। इसके साथ यह भी महत्वपूर्ण है कि छठ हमें हमारे सूर्य, हमारी नदियां, हमारे पर्यावरण को सम्मान देने के प्रति सचेत करता है। शायद इसीलिए इस पर्व में पलास्टिक जैसे पर्यावरण को हानि पहुंचाने वाले वस्तु का उपयोग वर्जित माना जाता है। जबकि पूजन सामग्री भी पर्यावरण के अनुकूल सूखी लकड़ियों और गोइठे पर ही पकाने की परम्परा है। विश्वास है आने वाले दिनों में भी ये त्योहार हमें बिहार की सास्कृतिक परंपरा से जोडते हुए,उर्जस्वित करते रहेंगे।

पटना कलम परिवार की ओर से आप सबों को हार्दिक शुभकामनाएं।

रवि परमार

(रवि परमार)
प्रधान सचिव
कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार

राज्य खेल अकादमी एवं अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम का शिलान्यास

मिलेगी राजगीर को नई पहचान

पर्यटन और तीर्थाटन के अलावे खेल के क्षेत्र में भी राजगीर की अलग पहचान देश और दुनिया में बनेगी। राज्य खेल अकादमी एवं अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम का शिलान्यास एवं कार्यारंभ करने के बाद मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने राजगीर के इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर में आयोजित जनसभा को संबोधित करते हुए कहा। 40 हजार क्षमता वाले इस स्टेडियम के निर्माण पर 633 करोड़ रुपये व्यय किये जायेगे। इसका निर्माण कार्य दो साल में पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। इस स्पोर्ट्स एकेडमी और इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम के लिए 150 फीट चौड़ी सड़क का निर्माण कराया जाएगा।

इस स्टेडियम में करीब दो हजार गाड़ियों की पार्किंग की व्यवस्था होगी। इस स्पोर्ट्स एकेडमी में 300 लड़के और 200 लड़कियों को आवासीय प्रशिक्षण दिया जाएगा। स्टेडियम के बगल में छोटा हेलीपैड भी बनाया जाएगा। इस स्पोर्ट्स एकेडमी को संवाद कौशल से जोड़ा जायेगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि भगवान बुद्ध और तीर्थंकर महावीर की कर्मभूमि राजगीर में इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम और स्टेट स्पोर्ट्स एकेडमी के निर्माण की योजना उन्होंने बहुत पहले बनाई थी। जिसको आज शिलान्यास कर मूर्त रूप दिया गया है। उन्होंने कहा कि इस स्टेडियम में इनडोर और आउटडोर दोनों तरह के खेल खेले जा सकेंगे। बी सी सी आई से भी निर्माण की स्वीकृति प्राप्त कर ली गई है। इसके साथ ही स्पोर्ट्स एकेडमी का निर्माण किया जाएगा, जिसमें फुटबॉल के प्रशिक्षण और खेलने के लिए अलग-अलग मैदान बनाए गए हैं। इसके अलावे हॉकी, वॉलीबॉल, टेनिस, बैडमिंटन, क्रिकेट, साइकिलिंग, तैराकी आदि के प्रशिक्षण की यहां व्यवस्था है। उन्होंने कहा कि यहां आवासीय प्रशिक्षण दिया जाएगा। इसके लिए खिलाड़ियों के लिए छात्रावास और प्रशिक्षकों के लिए आवासीय भवन की व्यवस्था की गई है।

उन्होंने कहा कि खेल युवा वर्ग के लिए जरूरी है। शिक्षा के साथ-साथ खेल में भी कैरियर की तलाश के लिए युवाओं को आगे आनी चाहिए। उन्होंने कहा कि राजगीर में पहले से मगध सम्राट जरासंध का अखाड़ा है। इसी दृष्टिकोण से राजगीर में इस स्टेडियम स्थल का चयन किया गया है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा कि बिहार के प्रतिभा संपन्न खिलाड़ियों को प्रशिक्षण के लिए अब बाहर जाने की जरूरत नहीं है। अब इसी स्पोर्ट्स एकेडमी में उन्हें प्रशिक्षण दिया जायेगा। वे अपने साथ राज्य और देश का नाम देश दुनिया में रोशन करेंगे। राजगीर की मनोरम पंच पहाड़िया और पर्यावरण जिस तरह देश और दुनिया के सैलानियों, हिन्दू- मुस्लिम, जैन-बौद्ध धर्मावलंबियों को अपनी ओर आकर्षित करते रहा है उसी तरह दुनिया के खिलाड़ियों को भी अपनी ओर आकर्षित करने में सफल होगा, यह उनका विश्वास है। राजगीर के पास ठेरा मौजा में दो स्थानों पर आईटी सिटी का निर्माण कराया जाएगा। इन दोनों के बीच में इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम और स्पोर्ट्स एकेडमी रहेगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राजगीर के सर्वांगीण विकास के लिए अनेक योजनाओं पर काम चल रहे हैं। सभी काम पूरे हो जाएंगे तब राजगीर का दृश्य और परिदृश्य बदल जाएंगे। उन्होंने कहा कि राजगीर में बन रहे जू सफारी के पास ग्रीन सफारी का भी निर्माण कराया जाएगा। लखीसराय के क्रीमनला खुदाई की चर्चा करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि वे राज्य के कई क्षेत्रों में ऐतिहासिक और पुरातात्विक स्थलों के विकास के लिए कई योजनाओं को मूर्त रूप दे रहे हैं।

इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी ने कहा कि राजगीर का यह स्टेडियम हिंदुस्तान का अपने तरह का अकेला स्टेडियम होगा। यह देश में अपनी तरह का इकलौता संस्थान होगा, जहां स्टेडियम व स्पोर्ट्स एकेडमी एक साथ होंगे। यह स्टेडियम राजगीर और बिहार के विकास में चार चांद लगाएगा। उन्होंने ने कहा कि स्टेडियम के पास ही आईटी पार्क और एयरपोर्ट बनाया जाएगा। राजगीर के प्राकृतिक सौंदर्य और पर्यटन की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि जब देश में कहीं रोप-वे का निर्माण नहीं हुआ था तब राजगीर में रोप-वे बना था। उन्होंने कहा कि राजगीर में विश्व शांति स्तूप पर जाने के लिए नए रोप-वे का निर्माण कराया जा रहा है, जिसका निर्माण कार्य शीघ्र पूरा कर लिया जाएगा। उन्होंने कहा कि राजगीर में जू सफारी पार्क का निर्माण कराया जा रहा है, जो पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बनेगा। उन्होंने कहा कि शिक्षा जितना ही खेल भी जरूरी है। खेल के क्षेत्र में भी कैरियर बनाया जा सकता है। और देश

ख़ दुनिया में अलग पहचान बनाई जा सकती है। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि आज का दिन ऐतिहासिक है। सुबह में पटना में पुलिस भवन का उद्घाटन किया गया। दोपहर में इंटरनेशनल लेवेल के स्टेडियम व राज्य खेल अकादमी की बुनियाद रखी जा रही है। कहा, यहां का कन्वेंशन सेंटर पटना में बने ज्ञान भवन से भी बेहतर हैं। शीघ्र ही आईटी पार्क और एयरपोर्ट की भी आधारशिला रखी जाएगी। विश्व शांति स्तूप जाने का रोप वे पुराना हो चुका था। जल्द ही नया रोप वे चालू हो जाएगा। अंत में डिप्टी सीएम ने कहा कि आप सौभाग्यशाली हैं कि नालंदा में हैं।

विधानसभा अध्यक्ष विजय कुमार चौधरी ने कहा कि यह स्टेडियम व स्पोर्ट्स एकेडमी सूबे के युवाओं को खेल के प्रति जागरूक करेगा। बिहार के शरद कुमार ने जकार्ता में एशियन पारा ओलिम्पिक में उंची कूद में 2 गोल्ड मेडल पाए। बिहार के ही लड़के ने पहले ही टेस्ट में सेंचुरी बना दिखाई। गांवों में खेल मैदानों की कमी होती जा रही है।बिहार विधानसभा अध्यक्ष ने कहा कि महत्वाकांक्षी योजना का शुभारंभ आज किया गया है। पढ़ाई से खेल अब अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। अभिभावक भी पढ़ाई के साथ- साथ स्पोर्ट्स के लिए अपने बच्चों को प्रेरित करते हैं। खेल कैरियर का सशक्त माध्यम हो गया है। इससे भी आर्थिक उपार्जन किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि खेल में कैरियर बनाने से सब कुछ हासिल हो सकता है। उन्होंने कहा कि बिहार के उभरते हुए खिलाड़ियों को इससे बड़ा उपहार और कुछ नहीं हो सकता है। बिहार के खिलाड़ी बाहर जाकर प्रशिक्षण प्राप्त करते थे। तब इतना बेहतर कौशल का प्रदर्शन देश और दुनिया में करते थे। अब जब खेल के प्रशिक्षण की यहां व्यवस्था हो जाएगी तब वे यही प्रशिक्षण प्राप्त कर दुनिया में अपना प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगे। बिहार में आधारभूत संरचना के विकास में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के योगदान की उन्होंने तारीफ की। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार आधुनिक विश्वकर्मा हैं। जो सूबे में एक से बढ़कर एक स्थापना कराते जा रहे हैं।

कला-संस्कृति एवं युवा विभाग के मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि ने कहा कि बिहार के लिए इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम और स्टेट स्पोर्ट्स एकेडमी का शिलान्यास गौरव की बात है बिहार में पहले खिलाड़ियों के प्रशिक्षण एवं खेलने की ऐसी व्यवस्था नहीं थी। जिसके कारण यहां के खिलाड़ी विभिन्न प्रकार के मैचों को देखने और खेलने के लिए बाहर जाते थे। बिहार की विकास और सामाजिक कुरीतियों को मिटाने में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के योगदान की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि अब बिहार में आईपीएल मैच का आयोजन होगा। उन्होंने कहा कि स्टेडियम के बनने से यहां के खिलाड़ियों व खेल प्रेमियों को काफी बड़ा तोहफा मिला है। बिहार में खेल का वातावरण बनेगा। बिहार के खिलाड़ियों में जज्बा एवं उत्साह की कोई कमी नहीं है। बिहार के लोगों से जो मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने वादा किया वह पूरा किया है। सूबे में सामाजिक जागरुकता लाने और महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने का काम किया। सूबे में शराबबंदी कर एक बेहतर मिसाल कायम की और गरीब लोगों को बेहतर तोहफा दिया। उन्होंने कहा कि काम तेजी से हो इसपर विभाग के लोग ध्यान देंगे।

कला- संस्कृति एवं युवा विभाग के प्रधान सचिव रवि मनु भाई परमार ने आगत अतिथियों का स्वागत किया।उन्होंने इस परियोजना के बारे में विस्तार से बताया। इस अवसर पर नालंदा के प्रभारी मंत्री सह ग्रामीण कार्य मंत्री शैलेश कुमार, ग्रामीण विकास एवं संसदीय कार्य मंत्री श्रवण कुमार, सांसद कौशलेंद्र कुमार, नालंदा विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर सुनैना सिंह, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव सह भवन निर्माण विभाग के प्रधान सचिव चंचल कुमार, मुख्यमंत्री के सचिव मनीष कुमार वर्मा, पर्यटन विकास निगम के प्रबंध निदेशक इनायत खान के अलावा संस्कृति विभाग, भवन निर्माण विभाग और जिला प्रशासन के सभी वरीय अधिकारी मौजूद थे।

यह स्टेडियम अपने आप में अनूठा होगा। यह 90 एकड़ में फैला होगा। इसकी क्षमता 40 हजार दर्शकों की होगी। स्टेडियम निर्माण काम कराने वाली एजेंसी अरकॉप के संजय सिंह व तारिक ने बताया कि स्टेडियम का लुक (छवि) वानखेड़े स्टेडियम की तरह होगा। यहां पर खिलाड़ी ठहर सकें, इसकी भी व्यवस्था होगी। स्टेडियम तक पहुंच के लिए 150 फुट की सड़क बनायी जायेगी। पहले फेज में इसका ग्राउंड व स्टेडियम को तैयार करना है। इसे 24 महिने में पूरा कर लेना है। स्टेडियम में इंडोर स्पोर्ट्स हॉल होगा। इसमें क्रिकेट के अलावा हॉकी, बास्केटबॉल, फुटबॉल, बिलियर्ड, वॉलीबॉल, स्वीमिंग पुल, तैराकी सहित अन्य तरह के खेल की व्यवस्था होगी। यहां पर खेल के साथ पढ़ाई भी होगी। यह ड्यूल फंक्शन करेगा। यहां पर खिलाड़ियों को मैच खेलने के अलावा युवाओं व खेल में रूचि लेने वालों को ट्रेनिंग दी जायेगी।

● मनोज कुमार बच्चन

सुख शांति समृद्धि का प्रतीक है कौमुदी महोत्सव

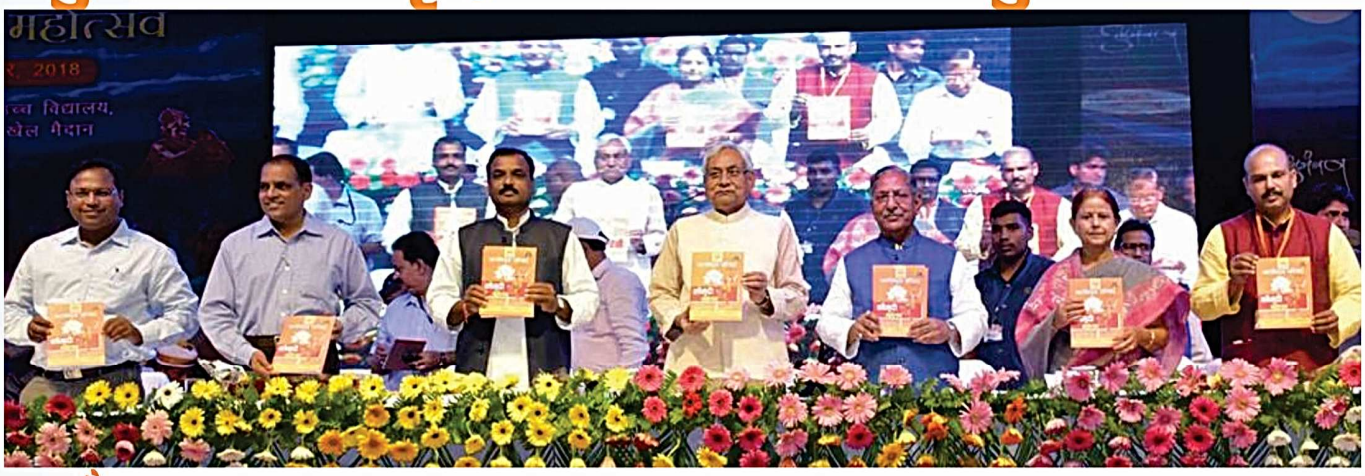

कौमुदी महोत्सव अगले वर्ष से शरद पूर्णिमा के दिन ही आयोजित किया जायेगा। शरद पूर्णिमा की रात चांद पृथ्वी के अधिक निकट आने के साथ आयुव्रेद और धर्म दोनों के ख्याल से फायदेमंद होता है। ये बातें मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कही। वे पटना सिटी के खेल मैदान में कला संस्कृति एवं युवा विभाग द्वारा आयोजित कौमुदी महोत्सव के उद्घाटन समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पटना घाट की जमीन रेलवे से लेने के बाद करीब पांच एकड़ जमीन बचेगी, इस जमीन पर पाटलिपुत्र का इतिहास ताजा करने का प्रयास किया जायेगा। उन्होंने कहा कि पटना सिटी पुराना पाटलिपुत्र है और दुनिया के बड़े हिस्से पर यहां से शासन किया गया है। मुख्यमंत्री ने प्राचीन पाटलिपुत्र की महत्ता पर प्रकाश डालते कहा कि दुनिया का सबसे बड़ा नगर था पाटलिपुत्र। भारत के बड़े क्षेत्र में पाटलिपुत्र से ही शासन होता था। प्रेम-भाईचारे से हम सब फिर से उस गौरव को प्राप्त कर सकेंगे। उन्होंने कहा कि गौरव की बात है कि सिख की कम आबादी होने के बावजूद पटना साहिब में सिखों के दसवें गुरु श्री गुरु गोविंद सिंह की जन्मस्थली है। दशमेश गुरु सात वर्षों तक यही रहे। यहां दशमेश गुरु का 350 वां यादगार प्रकाशोत्सव व शुकराना समारोह मनाया गया। राजधानीवासियों ने अतिथियों का स्वागत भव्य तरीके से किया जिसे आज भी लोग याद करते हैं।

उन्होंने कहा कि अगले वर्ष तक ऐतिहासिक स्थल गुरु का बाग में प्रकाश पुंज बनकर तैयार हो जाएगा। पटना घाट स्थित पुरानी रेल लाइन की जगह सड़क बनेगी। उसे आवागमन की सुविधा के लिए फोरलेन सड़क के माध्यम से गंगा पथ से जोड़ा जाएगा। पटना घाट में सड़क किनारे पांच एकड़ जमीन पर राजधानी का महत्वपूर्ण कार्य की योजना है ताकि यह महसूस हो सके कि यह पाटलिपुत्र, राजधानी का प्रमुख इलाका है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि यह बिहार देश का सभ्यता द्वार है। सम्राट अशोक युद्ध जीतने के बाद अपने अंदर एक दूसरे भाव को धारण कर बुद्ध के प्रति खुद को समर्पित कर दिया। वे चंडाशोक से धम्माशोक बने। अंत में शांति ही सबसे बड़ी चीज होती है और कौमुदी महोत्सव उसी शिक्षा को ध्यान में रखते हुए आगे बढ़ेगा। कहा जाता है कि इसी इलाके में सम्राट अशोक प्रतिवर्ष एक आयोजन करते थे जिसमें लगभग एक करोड़ लोग भाग लेते थे। हमलोगों ने सम्राट अशोक कन्वेंशन केंद्र बनवाया। जिसमें चंडशोक से धम्मशोक के रूप में अशोक की सांकेतिक मूर्ति लगी है। यहां सभ्यता द्वार भी बनाया गया है। यह ज्ञान भूमि है। यहां शिक्षा के केंद्र के रूप में नालंदा व विक्रमशीला जैसे विश्वविद्यालय रहे हैं।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पथ निर्माण मंत्री सह स्थानीय विधायक नंदकिशोर यादव ने कहा कि पटना सिटी पहले उपेक्षा का शिकार था। 2005 में एनडीए सरकार में पटना सिटी की भागीदारी के बाद से लगातार यहां का विकास होता गया। सिखों का पटना साहिब महोत्सव 2008 में आरंभ हुआ। इसके बाद कौमुदी महोत्सव आरंभ हुआ है। विकास के अनेक कार्य चल रहे हैं। कला संस्कृति एवं युवा विभाग के मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि ने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण ने रासलीला की थी। बिहार के हर क्षेत्र में सामाजिक बुराई दूर करने का काम सीएम नीतीश कुमार ने किया है। महिला, वृद्ध, युवा में जागरुकता आ रही है। कौमुदी महोत्सव का संदेश पूरे देश में जायेगा।

इस दौरान सीएम व अन्य अतिथियों को अंगवस्त्र व स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया। मुख्यमंत्री समेत अन्य विशिष्ट ने पाटलिपुत्र स्मारिका का विमोचन किया। मुख्यमंत्री ने विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धि के लिए प्रेम किरण, रामनरेश चौरसिया, संजय रॉय, डॉ. पीके अग्रवाल, कृष्ण कुमार अग्रवाल, प्रमोद कुमार यादव को सम्मानित किया। धन्यवाद ज्ञापन जिलाधिकारी कुमार रवि ने किया। इस असर पर पर मेयर सीता साहू,पाटलिपुत्र परिषद के संजीव यादव, कला एवं संस्कृति विभाग के प्रधान सचिव रवि परमार, मुख्यमंत्री के सचिव मनीष वर्मा भी उपस्थित थे।

बिहार गौरव गान के साथ सांस्कृतिक संध्या की शुरुआत हुई। इसके बाद श्रोताओं पर संगीत का जादू छाने लगा। इंडियन आइडल फेम दीपाली सहाय ने कार्यक्रम में फिल्मी गीतों को पेश कर बॉलीवुड तड़का डाला। इसके बाद भोजपुरी व मैथिली गायिका रानी सिंह ने लोकगीतों की सोंधी खुशबू बिखेरी। लोकगीत गायिका उर्मिला मिश्रा ने गणेश वंदना के साथ शुरुआत की और उसके बाद देवी गीत व छठ गीत पेश कर दुर्गापूजा व छठ महापर्व का माहौल बनाया। कार्यक्रम के अंत में मंच पर धमाल मचाने आए बॉलीवुड सिंगर ऐश्वर्य निगम। उनके आते ही श्रोताओं का जोश परवान चढ़ गया।

●रंजन सिन्हा

दशहरा महोत्सव

जीवंत हुई संगीत परंपरा

कला संस्कृति विभाग बिहार सरकार एवं आयुक्त कार्यालय पटना प्रमंडल, श्रीकृष्ण स्मारक विकास समिति द्वारा आयोजित दशहरा महोत्सव का उद्घाटन कला संस्कृति व युवा विभाग के मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि द्वारा किया गया। इस अवसर पर पटना प्रमंडल के आयुक्त राबर्ट एल. चौंगथू भी मौजूद रहे। श्रीकृष्ण मेमोरियल हाल में चार दिनों तक चलने वाले इस महोत्सव में 'छोटा बच्चा समझ के मुझको न बहलाना रे' गाने से मशहूर हुए बालीवुड गायक आदित्य नारायण के साथ पटना के लोगों ने जमकर धमाल मचाया। फिल्मी गीतों की शुरुआत आदित्य नारायण ने शापित फिल्म के अपने ही गाने 'कभी न कभी तो मिलोगे कहीं पे हमको यकीन है, तेरी जिन्दगी मेरी जिन्दगी है तेरे बिना ना हम जी सकेंगे एक पल' से की। इसके बाद आदित्य ने अपने पिता उदित नारायण के चर्चित गाने 'पहला नशा पहला खुमार' को दूसरी प्रस्तुति के रूप में पेश किया। इस गाने के बाद जब आदित्य ने 'टाइगर जिंदा है' का गाना 'पक्की यारियां यारियां में, होंदे ना फासले, एह नाराजगी कागजी सारी तेरी' को अपने स्वर में बांधकर गाने की शुरुआत की तब सारे दर्शक नाचने-झूमने लगे। इसके बाद तो खुद आदित्य भी मंचीय सीमा को तोड़कर दर्शकों के बीच आ गये। फिर आदित्य के गाने के साथ हर दर्शक गायक बना बैठा था। गब्बर इज बैक का गाना 'तेरी मेरी कहानी वो बारिश का पानी ' रामलीला का गाना 'दिल की ये गोली चली नैनो की बंदूक

से,बम भी गिरेंगे प्यार के संदूक से' सहित परवरदिगार बुल्लेया हाफिज तेरा मुर्शिद जैसे अनेक गाने आदित्य ने गाये।

आदित्य नारायण बारी-बारी से कई गीत गाकर रंग जमाने लगे। तेरी मेरी कहानी है, बारिशों का पानी है..., तेरी रूह का परिंदा फड़फड़ाये..., दिल की ये गोली चले..., गाकर माहौल बना दिए। इस अवसर पर डीएम कुमार रवि सहित कई लोग उपस्थित थे।

दशहरा महोत्सव के पहले दिन सबसे पहले उर्वशी मंच पर आयी और गाने लगी- ओ मेरे सोना रे सोना रे, दे दूंगी जान जुदा मत होना रे...। उर्वशी की गायिकी से थोड़ा माहौल बना।

दशहरा महोत्सव के दूसरे दिन चंदन दास ने अपनी गजलें सुनाकर एक अलग ही माहौल बना दिया। दूसरे दिन की शुरुआत रूपम के गीतों से हुई। फिर चंदन दास मंच पर आए। कला संस्कृति मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि ने उन्हें सम्मानित किया। चंदन दास ने कहा कि पटना आकर बेहद खुशी हो रही है। सबके बीच प्यार-मोहब्बत बढ़े, यहीं मेरी कामना है, क्योंकि आज इसी चीज की कमी है। मशहूर गजल- इस तरह मोहब्बत की शुरुआत कीजिए/ एक बार अकेले में मुलाकात कीजिए... सुनाकर शानदार शुरुआत की। फिर एक शायरी सुनाये- रोज कहता हूं भूल जाऊं उसे, रोज ये बात भूल जाता हूं। इसके बाद सुनाने लगे-नये घड़े के पानी से जब मीठी खुशबू आती है... माहौल बनते ही चंदन दास पूरे मूड में आ गए ।बोर्ड पर रहे पटना के एस. के. अनु औरर टार पर काजल चक्रवर्ती। इनके अतिरिक्त तबला पर दिल्ली के अरशद खान और वाइलिन पर रहे हलीम खान।चंदन दास ने कार्यक्रम की शुरुआत राम भजन से की। ' युगों-युगों से जैसे चमके सूरज चांद सितारे, एक दिन ऐसे ही चमकें तेरे भी सितारे, बस राम का नाम लिये जा और अपना काम किये जा' से शुरुआत के साथ ही हाल में बैठे दर्शक पूरी तरह से सुर ताल और लय की दुनिया में खो से गये। दशहरा महोत्सव में तीसरे दिन राजू श्रीवास्तव ने खूब रंग जमाया। डांडिया, कजरी, जट-जटिन और प्रिया और मीनू पटेल की गायिकी के बाद राजू श्रीवास्तव मंच पर आये।

दशहरा महोत्सव की अंतिम सुरमई शाम लोगों के लिए यादगार बन गई। मशहूर गायिका कल्पना ने अपनी गायिकी का रंग जमा दिया। कल्पना ने भोजपुरी, हिन्दी व भक्ति गीतों से पूरी महफिल को झूमने पर मजबूर कर दिया। कल्पना ने सूफियाना अंदाज में दमा दम मस्त कलंदर अली का पहला नंबर... गाकर लोगों को खूब झुमाया। इसके बाद यह कारवां चल पड़ा। दर्शक कल्पना संग सुर में सुर मिलाकर झूमते-नाचते रहे। मैने देख लिया सब चखकर तेरे इश्क से मीठा कुछ भी नहीं..., जब नाचिले बाजार हिलेला, मारे ठुमका तो यूपी बिहार हिलेला..., आदि गानों पर कल्पना पटवारी दर्शकों को श्रीकृष्ण मेमोरियल हॉल में झुमाती रही। उन्होंने मां भद्रकाली को समर्पित मां काली का एक भक्ति गीत गाया। फिर कल्पना भोजपुरी के रंग में रंग गई।

बिरजू महाराज के सान्निध्य में कथक

नृत्य गुरु पद्मविभूषण से सम्मानित पंडित बिरजू महाराज के सान्निध्य में निनाद पटना की ओर से बासा भवन में चार दिवसीय कथक कार्यशाला का आयोजन किया गया। अरसे बाद पटना और बिहार के युवाओं और बच्चों को कथक गुरु पंडित बिरजू महाराज से कथक सीखने का मौका मिला। कथक महाराज की कथक की कार्यशाला में बच्चे और युवाओं ने उनसे लखनऊ घराने से संबंधित विभिन्न अंग यथा आमद, थाट एवं ठुमरी की बारीकियां सीख रहे थे। उन्होंने जूनियर ग्रुप को तीन ताल में तिहाइयां और टुकड़े सीखे। वहीं इंटरमीडिएट ग्रुप में कृष्ण वंदना एवं सीनियर ग्रुप में धमार ताल में लड़ी ,तोड़े, टुकड़े आदि की शिक्षा दी गई। । इस मौके पर बिरजू महाराज ने बच्चों को जलसे की परंपरा के बारे में बताया और उन्हें कई तरह के घरानों की बातें भी बताईं। रेनबो होम्स के बच्चों को ततकार, प्रणाम हस्तका की तालीम दी गई तो वहीं जूनियर ग्रुप को तीन ताल में कृष्ण वंदना सिखाई गई। घिर घिर आई बदरा ... बंदिश की एक लाइन और एक से बढ़कर

एक अलग-अलग भाव भंगिमाएं ... कभी आंखें बोलती हैं तो कभी उंगलियां नाच उठती हैं। बिरजू महाराज ने कथक को उदाहरण देते हुए गहराई से समझाने की कोशिश की। कार्यशाला में बिरजू महाराज ने बैठकर अपनी प्रस्तुति दी और प्रशिक्षुओं को कई विधाओं की जानकारी दी। इस अवसर पर मौजूद निनाद की सचिव नृत्यांगना व महाराज जी की शिष्या नीलम चौधरी ने बताया कि इस वर्ष यह कार्यशाला राष्ट्रीय स्तर की है। इसमें देश भर से नृत्य प्रदर्शक एवं प्रशिक्षु भाग ले रहे हैं। पटना के साथ ही बिहार के विभिन्न जिलों और कोलकाता, दिल्ली, बनारस, सिलीगुड़ी से प्रतिभागी आए हैं। प्रशिक्षण की सुविधा के लिए कार्यशाला के प्रतिभागियों को उनकी समझ एवं पिछले प्रशिक्षण के आधार पर चार समूहों में बांटा गया है जो अप्रशिक्षित, निम्न प्रशिक्षित एवं प्रदर्शक के रूप में अलग-अलग खंडों में हैं।

किलकारी में कठपुतली

संगीत नाटक अकादमी भारत सरकार नई दिल्ली एवं बिहार बाल भवन 'किलकारी' के संयुक्त तत्वावधान में किलकारी परिसर में पुतुल महोत्सव का आयोजन 26 से 30 सितंबर तक हुआ । पुतुल कला के चार-चार अलग विधाओं में कठपुतली कला अर्थात धागा पुतुल, दस्ताना पुतुल, छड़ पुतुल और छाया पुतुल इन सारी कलाओं की प्रस्तुति सभागार में हुई। प्रेमचंद की कहानी सवा सेर गेहूं, गुरु रवींद्र नाथ टैगोर की कहानी काबुलीवाला के बहाने मानवीय वेदनाओं को कला के जरिए बयां किया गया। महोत्सव का उद्घाटन चर्चित कवि व लेखक सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की पुत्री एवं संगीत नाटक अकादमी की प्रतिनिधि शुभा सक्सेना एवं बिहार बाल भवन किलकारी की निदेशक ज्योति परिहार ने किया। महोत्सव का सीधा प्रसारण गीत नाटक अकादमी की वेबसाइट पर किया गया। इस आयोजन में धागे से जुड़े गुड्डे-गुड़िया एक से बढ़कर एक नाटक की प्रस्तुति दी। अंगुलियों के इशारे पर फुदक-फुदक पर अपनी प्रस्तुति से बच्चों को दिल जीता। कठपुतली नृत्य के जरिए कवि गुरु रवींद्र नाथ टैगोर की रचना काबुलीवाला की प्रस्तुति सभागार में उद्घाटन के मौके पर हुई। जिसमें उदयपुर राजस्थान लोक कला मंडल की ओर से लाइक हुसैन के निर्देशन में काबुलीवाला की प्रस्तुति हुई। कठपुतली कला के मशहूर कलाकार लाइक हुसैन ने कठपुतली नृत्य के जरिए कला के बारे में बच्चों को विस्तृत रूप से जानकारी दी। समारोह के हर दिन एक से बढ़कर एक प्रस्तुति सभागार में हुई। पुतुल यानि कठपुतली यात्रा के दौरान देश के 12 राज्यों के कलाकारों ने अपनी प्रस्तुति दिखाई। इन राज्यों में राजस्थान, दिल्ली, केरल, तमिलनाडू, आंध्रप्रदेश, मणिपुर, त्रिपुरा, असम, ओडिसा, महाराष्ट्र, पंजाब, पश्चिम बंगाल, दिल्ली, उत्तरप्रदेश आदि की टीम ने तेजीमोला','नट संकीर्तन, रासलीला, कालिया दमन जैसे कथाओं पर अपनी प्रस्तुति दी। पांच दिनों तक आयोजित होने वाले महोत्सव में राष्ट्रीय स्तर के कलाकारों ने भाग लिया। इन कलाकारों में लाइक हुसैन, केके रामचंद्र, राज केसर भाट, गणपत सखाराम मासगे, गणोश घोराई, दीप मित्र, मिलन यादव, अबनी शर्मा, गणोश घोरोई, कलाईमामनी एस सीतालक्ष्मी, चौतन्य बेहेरा, वनपार्थी वेंकट कुमार, सुदीप गुप्ता, कपिल, बत शर्मा,

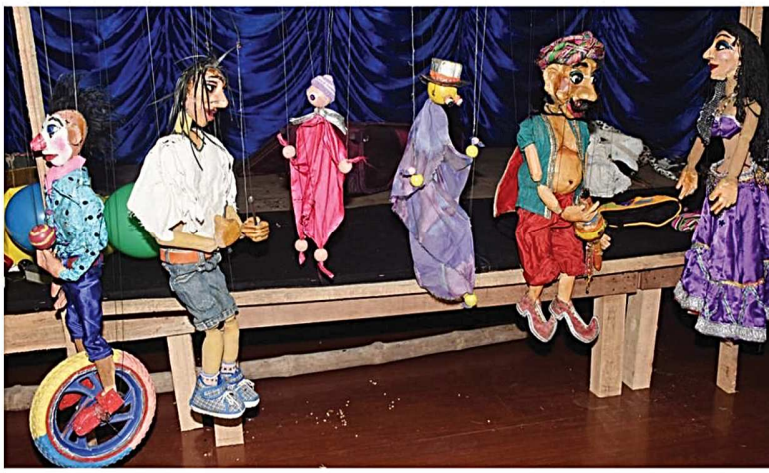

प्रभिताङ्शु दास आदि ने महोत्सव में प्रस्तुति दी। अंतिम दिन कपिल देव के निर्देशन में 'द बिग बैड वुल्फ' समकालीन पुतुल थियेटर मुंबई की प्रस्तुति हुई। शो में छड़ और दस्ताना दोनों तरह के पुतुल का उपयोग किया गया। इसके बाद सुदीप गुप्ता के निर्देशन में 'टेमिंग ऑफ द वाइल्ड' और वनपार्थी वेंकट कुमार के निर्देशन में 'सुंदर काण्ड' दिखाया गया। पपेट शो में कठपुतलियों की भाव-भंगिमाओं ने बच्चों को जीवन के कई रंग, कई अहसास से रूबरू कराया है। कार्यक्रम में रेनबो होम, बाल केंद्र, खुला आश्रय के 2500 बच्चों ने कई बातें सीखीं।

30 देश, 50 कलाकार, 250 पेंटिंग

बिहार म्यूजियम की अस्थायी कला दीर्घा में मिजॉट आर्ट की प्रदर्शनी आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी में 30 देशों के 50 कलाकारों की 250 पेंटिंग प्रदर्शित की गई। बिहार म्यूजियम में मिजॉट आर्ट की प्रदर्शनी लगाने के साथ ही उसपर एक लेक्चर का आयोजन किया गया। इसमें कनाडा से आए आर्ट डायरेक्टर और ग्राफिक्स डिजाइनर गाय लैंजेविन और रूस के येकाट्रिनबर्ग मीसेम्ड फिन आर्ट के डायरेक्टर निकिता कोर्टिन ने मिजॉट के बारे में जानकारी दी।

तक्षशिला द्वारा आयोजित इस पेंटिंग प्रदर्शनी में 50 अलग-अलग देशों की संस्कृति देखने को मिली । जिसमें कनाडा की सभ्यता और फ्रांस की आजादी दिखाई गई थी। साथ ही ईरान और बांग्लादेश की मजबूरी और कलाकारों की परेशानी को दिखाया गया था । इन सब आर्ट कलाकारों के बीच भारत के सिर्फ एक कलाकार दत्तारे आप्टे की पेंटिंग भी प्रदर्शित की गई थी। पेंटिंग की खासियत थी कि उसको कॉपर के प्लेट पर पत्थर से रगड़ कर तैयार किया जाता है जिससे इसकी खूबसूरती और बढ़ जाती है।

इस प्रदर्शनी में मैक्सिको, बेलजियम, ईरान, बांग्लादेश, कनाडा, फ्रांस, आइसलैंड के साथ 49 देशों की कलाकृतियां देखने को मिलीं। प्रदर्शनी की खासियत थी कि सब छापा कला के रुप में थी। फ्रांस से आई कलाकार गैसान रीटिओ ने कहा कि हमारी कला को बनाने में दो से तीन महीने का समय लगता है। इन सब की खासियत है कि इनकों हाथ से तैयार किया जाता है। इसके साथ ही कनाडा से आई ग्रबिराह चौम्प ने भी अपनी कला की खासियत बताते हुए कहा कि हम अपनी सारी कला को छापा के माध्यम से बनाते हैं जो देखने में भी खास होती है और इसके रंग को भी हम बहुत चुन कर भरते हैं।

मिजॉट आर्ट में ब्रश, कलर, स्टैंड, पेंसिल, रबड़ की कोई जरूरत नहीं पड़ती है। पेंटिंग बनाने के लिए कॉपर का प्लेट तैयार किया जाता है। इसमें अर्द्ध चंद्र आकार के एक लोहे का सांचा रहता है, जिसमें एक स्टैंड से घिसाई की जाती है। पेंटिंग में बाइट-ब्लैक कलर की मनचाही आकृति उभर कर सामने आती है। भारत में मिजॉट आर्ट नई विधा है। म्यूजियम में भारत के आनंद बनर्जी, रेआप्टे दत्ता और ईरान की हेदिया जाफरी के साथ कनाडा, रूस, मोरक्को, बांग्लादेश, स्वीडन, ईरान, फ्रांस, स्वीट्जरलैंड कई देशों के कलाकारों ने हिस्सा लिया। मिजॉट आर्ट में मॉडर्न आर्ट के साथ ही पशु, पक्षी, इंसान, शहर और ग्रामीण परिवेश की प्रदर्शनी लगाई गई। इस असर पर मुख्यमंत्री के सलाहकार अंजनी कुमार सिंह, कला संस्कृति विभाग के प्रधान सचिव रवि परमार, बिहार म्यूजियम के निदेशक युसुफ सहित कई कलाकार उपस्थित थे।

राजस्थानी लोकरंग से मुग्ध हुआ पटना

खुले आसमान के नीचे ढोल, नाल, मंजीरा, हारमोनियम आदि वाद्ययंत्रों से निकलते मधुर स्वर के साथ राजस्थानी पारंपरिक लोक गीत समारोह में चार-चांद लगा रहे थे। ये नजारा बिहार संग्रहालय परिसर के मुक्ताकाश मंच पर देखने को मिला। मौका था अर्थशिला और बिहार संग्रहालय के तत्वावधान में 'राजस्थानी लोक संगीत भुट्टे खान मंगनियार एवं कालबेलिया नर्तकिया' कार्यक्रम के आयोजन का। उद्घाटन संग्रहालय के निदेशक यूसुफ एवं अर्थशिला के संजीव कुमार ने किया। नवरात्र के मौके पर राजस्थान से आए लोक कलाकारों ने अपने पारंपरिक लोक नृत्य एवं गीतों को पेश कर समारोह में चार-चांद लगाकर दर्शकों की तालियां बटोरीं। समारोह में मंच पर आसीन राजस्थान से आए लोक कलाकारों ने कार्यक्रम की शुरुआत स्वागत गीत 'केसरिया बालम आवोनी पधारो म्हारे देश जी, पियां प्यारी रा ढोला, आवोनी पधारो म्हारे देश' को पेश कर दर्शकों का अभिनंदन करते हुए उनका मनोरंजन कराया। कलाकारों ने राजस्थान के पारंपरिक लोक गीत 'गोरबंद' जिसमें ऊंट के गले में विशेष श्रृंगार कर गोरबंध नखरालो गीत गा दर्शकों का दिल जीता। लोक गीतों में भक्ति रस के गीतों की बयार बहा कलाकारों ने राधा-कृष्ण के प्रेम कहानी को बखूबी दिखाया। गीत के जरिए 'राधा-रानी दे दो मोरे बांसुरी, इस बंशी में राधा तोरे प्राण बसो' को पेश कर कृष्ण और राधा के प्रेम को बयां किया।

अतुल्य भारत 2018

कला की विविधता से छाए संस्कृति के रंग

कला संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार तथा उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र,भारत सरकार के द्वारा भारतीय नृत्य कला मंदिर में अतुल्य भारत 2018 का आयोजन किया गया। पांच दिवसीय इस आयोजन में जहां चित्रकला शिविर में कोरे कैनवास पर कलाकृतियां केरी गईं तो विभिन्न प्रदेशों से आए कलाकारों की सतरंगी छटा दिखी। अतुल्य भारत उत्सव के तहत एक कला शिविर का आयोजन हुआ। जिसमें उमेश शर्मा, विनोद कुमार गुप्ता, मनोज बच्चन, वीरेंद्र कुमार सिंह, अनीता कुमारी, मनीष कुमार, ममता केशरी जैसे कलाकार समकालीन चित्रकला के माध्यम से कलाकृतियां बनायीं तो दूसरी तरफ साधना देवी, अल्का दास, विभा लाल, मनोज पंडित, रूपा कुमारी सहित कई सारे कलाकारों ने लोक चित्रकला के माध्यम से बिहार के रंग उकेरे।

शुरुआत यूपी से आए कलाकारों ने की। मोर पंख लगाकर वृंदावन का मयूर नाच इस अंदाज में पेश किया कि हर कोई वाह-वाह कर उठा। इसके बाद राजस्थान की कलाकार ललिता देवी का जादू चला। भवाई नृत्य की शानदार प्रस्तुति देकर सबका दिल जीत ली। इसके बाद गुजरात से आए कलाकारों ने सिद्धि धमाल नृत्य किया। इसके बाद मनोरंजन ओझा और उनके दल ने अपने लोकगीतों से बिहारी माटी की खुशबू बिखेर दी। दूसरे दिन से नाटकों की शृंखला भी शुरू हो गई। जिसके अंतर्गत निर्माण कला मंच के कलाकारों ने संजय उपाध्याय के निर्देशन में भिखारी ठाकुर लिखित 'बिदेसिया' नाटक का मंचन किया।

तीसरे दिन भी बहुरंगी संस्कृति की शानदार झलक देखने को मिली। शुरुआत देवी गीत से हुई। लक्ष्मी पांडेय ने निमिया के डाढ़ी मईया लावे ली हिलोरवा ...गाकर शुरुआत की। इसके बाद राजधानी की चर्चित भरतनाट्यम नृत्यांगना सुदीपा घोष अपनी टीम के साथ मंच पर आयी और देखते-देखते पूरे माहौल को कृष्णमय बना दी। इस दौरान मनोरंजन ओझा व उनके दल ने अपनी गायकी इस पूरे प्रस्तुति को और शानदार बना दिया। जाओ सखी वृंदावन जाओ...सुनने लायक था। इसके बाद राजू मिश्रा और उनके साथियों ने सूफी गायन करके एक अलग ही माहौल बना दिया। उत्तर प्रदेश ब्रज से आये कलाकारों ने चारकुला नृत्य करके एक अलग ही समां बांध दिया। इसके बाद गुजरात से आये कलाकारों ने जनजातीय नृत्य सिद्धि धमाल करके फिर धमाल मचाया। फिर मणिपुर से आये कलाकारों ने मार्शल आर्ट पर केंद्रित प्रस्तुति देकर वाहवाही लूटी। । प्रयास रंगमंडल के कलाकारों ने मिथिलेश सिंह के निर्देशन में पहाड़ काट कर रास्ता बनानेवाले अथक संघर्ष के योद्धा दशरथ मांझी का जीवन एक बार फिर मंच पर दिखाया।

चौथे की दिन की शुरुआत गया से आए बच्चा नसीम कव्वाली दल के कलाकारों ने की। इसके बाद नीलम चौधरी और उनकी टीम कथक संग मंच पर आयी और देखते-देखते छा गई। फिर हरियाणा के कलाकारों ने फाग, गुजरात के कलाकारों ने टिप्पणी की प्रस्तुति देकर वाहवाही लूटी। राजस्थान से आए कलाकारों ने ने घूमर नृत्य कर अलग माहौल बनाया। वहीं मणिपुर के कलाकारों ने एक बार फिर मार्शल आर्ट का कमाल दिखाया। भवई, सिद्धि धमाल और ब्रज की होली का भी रंग देखते बना। प्रांगण के द्वारा अभय सिन्हा के निर्देशन में फूल नौटंकी विलास का मंचन किया गया। बिहार की लोक गाथाओं पर आधारित यह नाटक एक पेशेवर योद्धा के इर्द-गिर्द घूमता है। आखिरी दिन मणिपुर से आए एम. इबोमचा की टीम ने राधा-कृष्ण रास का प्रदर्शन कर दर्शकों का मन मोह लिया। मणिपुरी भाषा के बोल भले ही दर्शकों की समझ में नहीं आ रहे थे, पर खूबसूरत अदाओं का खूब लुत्फ उठाया गया। इससे पहले मणिपुरी कलाकारों ने मार्शल आर्ट और तलवारबाजी का प्रदर्शन किया। प्रख्यात कथक नृत्यांगना रानी खानम ने आमिर खुसरो और बुल्ले साह के सूफी कलाम पर समूह नृत्य पेश किया। इनका साथ शिखा शर्मा, तान्या सहगल, सौम्या कोहली, निशा केसरी एवं सारा ने दिया। कार्यक्रम की शुरुआत भोजपुरी लोक गायक रामकृष्ण सिंह के द्वारा गाए गीतों से हुआ। देवी गीत, पूर्वी और झूमर से दर्शक झूम उठे। साज पर इनका साथ विजय कुमार चौबे, सलीम, सुनील कुमार, दिनेश कुमार और अरविन्द कुमार ने दिया। गुजरात से आये कलाकारों ने सिद्धि धमाल, हरियाणा के कलाकारों ने फाग सहित ब्रज के कलाकारों ने भी खूबसूरत प्रस्तुतियां दीं।

● नेहा कुमारी

इप्टा ने मनाया प्लेटिनम जुबली समारोह

अक्टूबर महीने में सर्दी ने दस्तक दी या यूँ कहे कि नाटक करने या देखने के लिए उपयुक्त समय आ गया। इस मौसम में रंगकर्मियों में एक जोश रहता है। किसी तरह का कोई व्यवधान सामने नही आता। आइये नजर डालते हैं, इस महीने बिहार में मंचित हुए नाटकों पर। महीने के पहले सप्ताह में केदार, पटना ने कालिदास रंगालय में आचार्य देवेंद्र नाथ शर्मा लिखित विशाल कुमार तिवारी निर्देशित नाटक 'शाहजहाँ के आँसू', साथ ही दिनकर कला भवन बेगूसराय में न्यू एज थियेटर वर्कशॉप एण्ड रेपेट्री, बेगूसराय ने मोहित चटर्जी लिखित अवधेश निर्देशित 'गुनियापिग' का मंचन किया। मॉडर्न थियेटर फाउंडेशन, बेगूसराय ने सामुदायिक भवन परिसर,बाघा, बेगूसराय में कृष्ण चन्द्र लिखित परवेज यूसुफ निर्देशित 'गड्ढा' का मंचन किया। द स्पॉटलाइट, दरभंगा ने राजकमल चौधरी लिखित सागर सिंह निर्देशित नाटक 'अर्धांगिनी' का मंचन क्रमशः 7, 18 और 29 को संत लक्ष्मीनाथ गोसाई कलाभवन, सहरसा, नीलमणि सांस्कृतिक परिषद मुक्ताकाश मंच, भटसिमर, मधुबनी एवं कालिदास रंगालय, पटना में किया।

दूसरे सप्ताह 'अतुल्य भारत' कार्यक्रम के अंतर्गत पांच दिवसीय आयोजन भारतीय नृत्य कला मंदिर, पटना में हुआ। इस आयोजन में शिरकत करनेवाले संस्थाओं में निर्माण कला मंच, पटना ने भिखारी ठाकुर लिखित संजय उपाध्याय निर्देशित 'बिदेसिया', कला जागरण, पटना ने डॉ अखिलेश कुमार जायसवाल लिखित मो जानी निर्देशित 'मृर्दंगिया', प्रयास, पटना ने मिथिलेश सिंह लिखित एवं निर्देशित नाटक 'दशरथ माँझी', प्रांगण, पटना ने अरुण कुमार सिन्हा लिखित अभय सिन्हा निर्देशित 'फूल नौटंकी विलास' का मंचन किया।

तीसरे सप्ताह आलय, भागलपुर द्वारा स्वदेश दीपक की कालजयी रचना श्कोर्ट मार्शलश का मंचन कुमार चौतन्य प्रकाश के निर्देशन में कला केंद्र, भागलपुर में किया गया। इस नाटक को देश में वर्षभर कही-न-कही खेला जाता ही रहता है। दलित विमर्श, उसके उत्पीड़न और प्रतिरोध को बहुत जोरदार ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

अंतिम सप्ताह आयोजनों की धूम रही मोतिहारी में परिवर्तन द्वारा प्रसाद रत्नेश्वर लिखित सिकन्दर-ए-आजम द्वारा निर्देशित नाटक 'निलही कोठी' का मंचन हुआ। इप्टा के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय प्लैटिनम जुबली समारोह 27 से 31अक्टूबर तक राजधानी पटना के प्रेक्षागृहों में कलाप्रेमी सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आनन्द लेते रहे। कालिदास रंगालय में क्रमशः इप्टा, पटना ने भीष्म साहनी लिखित तनवीर अख्तर निर्देशित 'कबिरा खड़ा बाजार में', मणिपुर इप्टा ने महाश्वेता देवी लिखित रणवीर किशियांग निर्देशित 'अंजीर', कोरोनेशन आर्ट थियेटर, शाहजहांपुर, इप्टा ने राजेश कुमार लिखित जरीफ मल्लिक निर्देशित 'गाय', एकजुट मुम्बई ने नादिरा बब्बर लिखित मकरंद देशपाण्डे निर्देशित 'मेरी मां के हाथ', महाराष्ट्र नागपुर इप्टा ने शैलेष नावडे लिखित रूपेश पवार निर्देशित 'मसीहा', अल्टरनेटिव लिविंग थियेटर ने प्रोबिर गुहा लिखित देवाशीष गुहा निर्देशित 'लॉन्ग मार्च' का मंचन किया।

प्रेमचन्द रंगशाला में मुम्बई इप्टा ने देवाशीश मजूमदार लिखित रमेश तलवार निर्देशित 'कशमकश', उत्तर प्रदेश इप्टा ने प्रदीप घोष लिखित एवं निर्देशित 'संझा', छत्तीसगढ़ इप्टा ने अजय आठले लिखित एवं निर्देशित 'मोगरा जियत हवे', राजस्थान जयपुर इप्टा ने जॉन स्टेनबैक लिखित रमेश कोठारी निर्देशित 'ऊंदरा', बिहार छपरा इप्टा ने भिखारी ठाकुर लिखित अमित रंजन निर्देशित 'बिदेसिया', समानांतर प्रयागराज इप्टा ने अख्तर अली लिखित अनिल रंजन मौलिक निर्देशित 'असमंजस बाबू' का मंचन किया।

भारतीय नृत्य कला मंदिर में झारखण्ड चाईबासा इप्टा ने मंजुल भारद्वाज लिखित दिनकर शर्मा निर्देशित 'नपुंषक', उत्तर प्रदेश आगरा, इप्टा ने राजेश रघुवंशी लिखित दिलीप रघुवंशी निर्देशित 'मेरा कब होना राज सुराज', उत्तर प्रदेश रायबरेली इप्टा ने संतोष डे लिखित एवं निर्देशित 'रेफलेशिया', पश्चिम बंगाल इप्टा ने रत्नदीप मुखर्जी लिखित एवं निर्देशित 'ई मृत्यु उपात्याका आमार देश ना', बेगूसराय इप्टा ने कुमार संजय लिखित अरविंद कुमार निर्देशित 'हवा रोको', मधुबनी इप्टा ने वागीश कुमार झा लिखित अनिल मिश्रा निर्देशित 'महाभारत एक्सटेंशन' का मंचन किया।

पन्नालाल मुक्ताकाश मंच, पटना सिटी में चंडीगढ़ इप्टा ने नादिरा बब्बर लिखित नीतू शर्मा निर्देशित 'जी जैसी मर्जी', पंजाब इप्टा ने पंकज सुधीर लिखित जगदीश खन्ना निर्देशित 'अंतहीन' का मंचन किया। इसके अलावा नुक्कड़ नाटकों का मंचन हुआ।

● राजन कुमार सिंह

बिहार हैं हम

विनायक शर्मा

गंगा की गोदी में फैले,
बुद्ध के अवतार हैं हम।
वीर कुंवर के साहस हैं,
गाँधी की पुकार हैं हम।
गणतंत्र की जन्मभूमि हैं
ज्ञान के भण्डार हैं हम।
अशोक की शासन-शैली,
वात्स्यायन के काम हैं हम।
दिनकर की कविता हैं,
विद्यापति की गान हैं हम।
वाल्मीकि के रामायण हैं
शुश्रुत के चमत्कार हैं हम।
आर्यभट्ट के गणित हैं,
चाणक्य अर्थ के सार हैं हम।
तिरंगे के अशोक चक्र,
योग के आधार हैं हम।
वैभवशाली इतिहास के साथ
आज भी सबसे आगे बिहार हैं हम

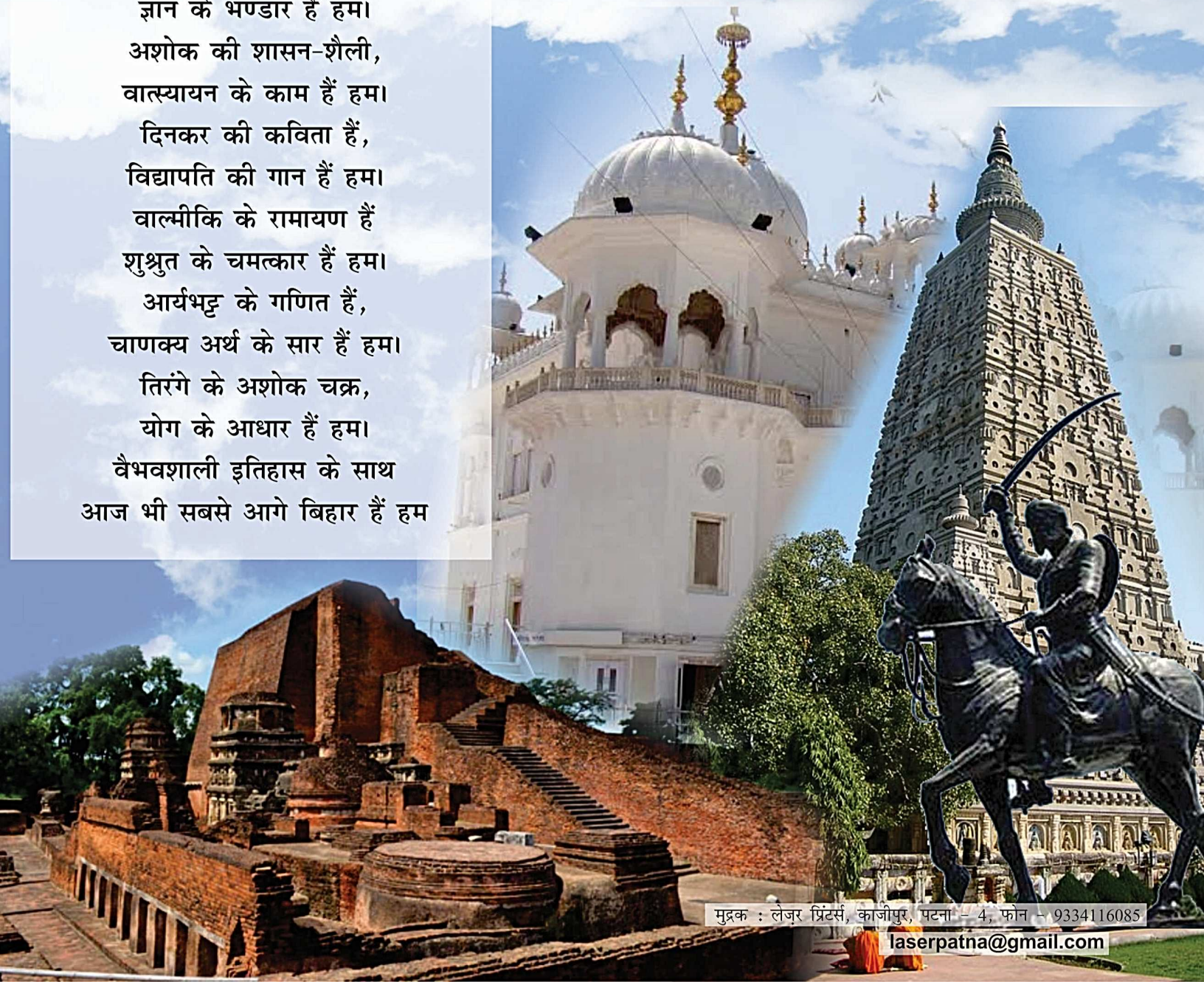

मुद्रक : लेज़र प्रिंटर्स, काजीपुर, पटना – 4, फोन – 9334116085
laserpatna@gmail.com